Shikshan Sanshodhan : Journal of Arts, Humanities and Social Sciences ISSN(o): 2581-6241
Monthly, Peer-Reviewed, Refereed, Indexed Journal Impact Factor: 6.471
Volume - 6, Issue - 7, July - 2023 Publication Date: 15/07/2023

DOIs:10.2018/SS/202307004 --:-- Research Paper / Article / Review

'रेहन पर रग्घू' उपन्यास में पितासंघर्ष

DR. IDA MANUEL

ASSISTANT PROFESSOR, HINDI DEPT., GOVT. VICTORIA COLLEGE, PALAKKAD, KERALA

Email - hindiida@gmail.com

सारांश : 'रेहन पर रग्घू' काशीनाथ सिंह द्वारा रचित एक बहुचर्चित उपन्यास है| इसका प्रकाशन 2008 में हुआ तथा 2011 में इसे साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया|भूमंडलीकरण एवं बाजारवाद नेमहानगरों एवं शहरों को प्रभावित किया है, गाँव भी इससे अछूते नहीं हैं| भारत के गाँव में रहने वालों की जिन्दगी पर बनारस और कैलिफोर्निया के पारिवारिक और सामाजिक रिश्तों का प्रभाव कैसे पड़ा है| ये जनचेतना और इंसानियत को कैसे बदल दिए हैं | इसका चित्रंण इस उपन्यास में स्पष्ट दृष्टिगोचर होता है|

काशीनाथ सिंह ने इस उपन्यास में किसानों एवं ग्रामीणों की समस्याओं एवं बदलते जीवन मूल्यों को यथार्थवादी ढंग से प्रस्तुत किया है| मेहनत और धैर्य से जीवन बिताने का परिश्रम रघुनाथ में है | वे विश्वास करते हैं कि इस दुनिया की कोई भी ताकत तथा कोई भी अड़चन उन्हें सफ़ल होने से नहीं रोकती। अपने मंज़िल की तरफ़ वे कदम बढ़ाते है | पर वही धैर्य खो जाने से सब कुछ बदलता है, हर वक्त संघर्षमय हो जाता है और जीवन के सपनाओं का पहाड़ गिर जाता है |

मुख्य शब्द: नैतिक समस्या, नकारात्मक भाव, सामाजिक रिश्ता, किसान संस्कृति, मानसिक संघर्ष, जबरदस्ती हस्तक्षर, जीविकोपार्जन, चिंताग्रस्त, कृतज्ञ भाव, बाप का स्वभिमान आदि |

कथा साहित्य में काशीनाथ सिंह का महत्वपूर्ण स्थान है। उन्होंने अपने उपन्यासों में वर्तमान सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक, दार्शनिक और नैतिक समस्याओं को नवीन दृष्टि से देखा और चित्रित किया है। मध्य वर्गीय परिवार के संघर्ष और द्वंद्व को नवीन परिवेश में प्रस्तुत किया है।

मानव जीवन में संघर्ष विभिन्न रूपों पर दिखाई देता है। इसे हम भीतरी एवं बाहरी, शारीरिक एवं मानसिक आदि वर्गों विभक्त कर सकते हैं। बाहरी एवं शारीरिक संघर्ष के अंतर्गत मनुष्य सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक, भाषिक जैसे विभिन्न स्थितियों से जूझता रहता है। वहीं दूसरी ओर उस के मन के भीतर ईर्ष्या, द्वेष, अहंकार, स्वार्थ जैसे नकारात्मक भावों और दया, प्रेम, करुणा, परोपकार सहयोग जैसे सकारात्मक भावों में निरंतर संघर्ष चलता रहता है।

'रेहन पर रग्घू' काशीनाथ सिंह द्वारा रचित एक बहुचर्चित उपन्यास है| इसका प्रकाशन 2008 में हुआ तथा 2011 में इसे साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया|भूमंडलीकरण एवं बाजारवाद नेमहानगरों एवं शहरों को प्रभावित किया है, गाँव भी इससे अछूते नहीं हैं| भारत के गाँव में रहने वालों की जिन्दगी पर बनारस और कैलिफोर्निया के पारिवारिक और सामाजिक रिश्तों का प्रभाव कैसे पड़ा है| ये जनचेतना और इंसानियत को कैसे बदल दिए हैं | इसका चित्रंण इस उपन्यास में स्पष्ट दृष्टिगोचर होता है|

महानगरीय सभ्यता के फलस्वरूप पहाड़पुर गाँव में हो रहे तीव्र परिवर्तनों के और किसान संस्कृतियों के अवसान के महाख्यान के साक्षी के रूप में आते हैं रघुनाथ| छोटी सी नौकरी, , बच्चों को अपने पैरों पर खड़ा होते देखने का उम्मीद, फिर बच्चों की शादी। ढ़ेर सारे सपने | बस,..... न कम न ज्यादा....हर आम घर का मुखिया यही सोचता है। 'रेहन पर रग्घू' उपन्यास का नायक रघुनाथ भी यही सोचता है | वे किसान संस्कृति के प्रतिनिधि पात्र हैं, गाँव और शहर के बीच के संघर्ष का सही दस्तावेज़ है| यह उपन्यास पारम्परिक गाँव में आये बदलाव की पड़ताल करता है|

पहाडपुर गाँव के एक परिवार है रघुनाथ का| रघुनाथ किसान होने के साथ साथ कॉलेज में अध्यापक भी हैं| रघुनाथ के परिवार में पत्नी शीला, बेटी सरला तथा दो बेटे – संजय और धनंजय हैं | बेटी पढ़ लिखकर मिर्जापुर में नौकरी करती है| 50 साल का

और दो बच्चेवाले अपने अध्यापक कौशिक से वे प्यार करती है । पर स्कूल की अधापिका मीनू तिवारी के अनुभव भरी एवं दर्दनाक प्यार की कहानी ने उसके दिल को झकझोर डाला | मीनू तिवारी उसे समझाती है "आज मैं यह कह सकती हूँ कि प्यार को प्यार ही रहने दो | उसे ब्याह तक न ले जाओ या ब्याह का विकल्प मत बनाओ |"1 बेटी केलिए 7 सालों तक रघुनाथ लड़का ढूँढता रहा और पिता और बेटी का उम्र बढता गया| यह काम आई. ए. एस और पी. सी.एस से ही शुरू हुआ| जल्द उनको लगने लगा ये सब उनकी औकात की बाहर की चीज़ है। भरोसा तो अपनी बेटी के रंग रूप और योग्यता पर था पर न कोई पूछनेवाला न देखनेवाला ।जब लगा रेट ज्यादा है फिर थोड़ी हल्की जगह दामाद के तालाश में जुट गए। इसलिए वे पिता से कहती है "पापा , आप ख्वामख्वाह परेसान है, बुझे शादी ही नहीं करनी|"2 इससे एक पिता का मानसिक संघर्ष दुगुना बढते नज़र आते है|

बड़ा बेटा संजय कंप्यूटर इंजिनियर है| यह रघुनाथ के कॉलेज के मैनेजर और पूर्व विधायक राँचीवाले प्रोफेसर सक्सेना की इकलौती बेटी सोनल को प्यार करता है । पिता का सपना था संजय सॉफ्टवेयर इंजीनियर बने, वह इंजीनयर तो बना और अमेरिका पहुंच गया | सोनल के पिता ने ग्रेविटेशन का नियम यह बता दिया था कि पृथ्वी माँ बाप हैं और अगर बेटा आगे जाना चाहता है तो माँ बाप उसे अपनी ओर खींचते है। संजय को माँ बाप के यह संस्कार वाले नियम भारी पड़ा। उसे आगे बढ़ना है, अमीर बनना है।

सोनल की सुंदरता की क्षतिपूर्ति के लिए उसका सर्टिफिकेट पर्याप्त था और वैसे भी रंग रूप जैसी चीज तो लड़की में देखी जाती है पत्नी में नहीं। संजय और सोनल का विवाह हो गया। यहां पर रघुनाथ जी की एक न चली, उनके अपने कलीग की लड़की से संजय के विवाह का सपना धराशायी हो गया। संजय ने शादी की और बाहर रहकर कमाने लगे | संजय की गलती का खामियाजा रघुनाथ को भुगतना पड़ा। उन्हें नेगलिजेन्स ऑफ ड्यूटी और इंस्बोर्डिनेशन का नोटिस मिला। वे हताश हो गए। सरला का विवाह और छोटे बेटे धनंजय को मैनेजमेंट में एडमिशन दिलाना दोनों उन्हें बहुत ही प्रयत्नशील काम बन पड़े । कैसे करेंगे वो ये सब। एक दिन लडकी केलिए लड़का देखकर लौटते वक्त वो सोचते हैं यह रिश्ता उनकी पत्नी को और उनकी बेटी को अच्छा लगेगा - छोटा परिवार है और वहां लड़की सुखी रहेगी। पर यही रिश्ते के लिए बेटी मना कर देती है। उनकी बेटी को कोई एस टी लड़का पसन्द थी । सरला कहती है लड़का पी सी एस है और शादी की कोई शर्त भी नहीं है। पर रघुनाथ नहीं मानते हैं। फिर सरला वापस शहर चली जाती है। संजय अपनी शादी के समय कुछ पैसे पिता को भेजता है, उसी पैसे से दिल्ली के किसी कॉलेज में धनंजय का एडमिशन लेता हैं| वह नॉएडा से एम. बी. ए. करने लगा|

रघुनाथ वॉलंटरी रिटायरमेंट लेते हैं और पेंशन ऑफिस का चक्कर काटते हैं कि कब पेंशन चालू हो।रिटायरमेंट के बाद लोगों की देखा देखी रघुनाथ ने अपनी खेती बारी की दूसरी व्यवस्था की| गांव में उनकी कुछ जमीन थी जो उन्होंने बंटाई पर दे रखा| किसान की सोच तक में आए परिवर्तन का सही चित्रण यहां है |

बदलते हुए सामाजिक परिवेश में नैतिक मूल्यों में भी परिवर्तन हुआ है|रघुनाथ के भतीजे न केवल उनकी ज़मीन हड़पने का प्रयास करते हैं,बल्कि उनके साथ गाली गलौच तथा मारपीट भी करते हैं| बाद में वे रघुनाथ से उनकी ज़मीन सम्बन्धित कागजों पर जबरदस्ती हस्तक्षर करवाने के लिए दो बदमाशों को भी भेजते हैं| यह घटना नैतिक मूल्यों में आयी गिरावट का प्रतीक है|

आर्थिक संसाधनों के अभाव में कुछगरीब किसान अपने बच्चों को शहर भेजकर पढ़ाने मेंअसमर्थ है| पर कुछ कठिन मेहनतों से अपने बच्चों की पढाई करके कमाई केलिए विदेश भेजते हैं | पर इसके बाद माता – पिता की पूछताछ नहीं होती |गाँव में एक ओर ऐसे किसान हैं जो स्वयं खेतों में काम नहीं करते, मजदूरों से काम कराते हैं| उनके बच्चे भी शहरों में पढ़ रहे है या नौकरी कर रहे हैं| रघुनाथ व अन्य ठाकुर इसी प्रकार के किसान हैं| पर माता पिता का हालचाल लेने वाला भी कोई नहीं। घर में फोन है, इसी चक्कर में लगाया गया था कि कभी संजय को विदेश से फोन करना पड़े, पर कभी किसी का फोन आता जाता नहीं।

किसानों को अपने जीवन में बहुत सारी चुनौतियों का सामना करना पड़ता है| किसान का जीविकोपार्जन बहुत ही कष्टसाध्य और श्रमसाध्य है| ग्रामीण क्षेत्र में किसानों की एक बड़ी समस्या उनकी ऋणग्रस्तता है| वे शीला को समझाता है कि "शीला, इन सब चीजों के सहारे ज़िन्दगी तो काटी जा सकती है, जी नहीं जा सकती |"3 रघुनाथ नौकरी करते है पर अपने बच्चों को पढ़ाने के लिए अपने खेत रेहन (गिरवी) रख देते है| साहूकारों से ब्याज पर कर्ज लेना ही पड़ता है| एक कथन में उनके मन के अंदर रिसता हुआ अवसाद बाहर निकलता है, जहां वो कहते हैं, शीला हमारे तीन बच्चे हैं लेकिन पता नहीं क्यों कभी कभी मेरे अंदर ऐसी हुँक उठती है जैसे लगता है-मेरी औरत बाँझ है और मैं निः सन्तान पिता हूँ। इन शब्दों से एक पति और पिता का घोर संघर्ष प्रकट है |

अड़ोसी पड़ोसी, बूढ़े लोगों को अकेला जानकर उनकी जमीन हथियाने को सोचते हैं, कभी उनके दुवार पर नाद गाड़ जाते हैं, कभी कहीं दीवाल खड़ी कर देते हैं। वो जानते हैं कितना भी ये मास्टर रहे हों पर आज इनकी तरफ से कोई बोलनेवाला नहीं।

फिर अचानक एकदिन इनकी बहु सोनल का फोन आता है कि वो बनारस लौट आई है और सास ससुर के बिना नहीं रह सकती। इस समस्या के मूल में उसके बनारस अकेले और आस पास होते हुए मर्डर और किडनैपिंग का डर है। शीला का मन तो जाने के लिए पिघल जाता है पर एक बाप का स्वभिमान उनको जाने से रोकता है। अपनी पत्नी से कहते हैं, सोनल बहु है, लेकिन घर बहु का है, हमारा नहीं। किस हैसियत से जाऊं मैं? मेहमान बन कर?किरायेदार बन कर? किस हैसियत से?";[4] "भाड़ में जाय बेटा बेटी बहू – दुनिया ! सबकी चिंता करने केलिए हमीं है ? रघुनाथ खासे तनाव में आ गए|"[5]

कहाँ उनका सपना था गाँव मे ही घर बने संजय कुछ पैसे भेजे तो?कहाँ वो बहु के यहाँ रहने जाएं?काफी मनाने बुझाने पर वो जाने को तैयार हो जाते हैं। सास ससुर मोटरी गठरी लेकर बहु के पास चले जाते हैं। कुछ दिन तो सास बहू की बनी फिर शीला अपनी बेटी के पास चली गयी| फिर एक दिन अचानक पता चलता है कि उनका छोटा बेटा संजय किसी साउथ इंडियन विधवा के साथ रह रहा है जिसकी एक बेटी भी है। पिता अपने जीवन मूल्यों पर व्यथित हो उठा| संजय और धनंजय से अपनी ज़मीन पर चिंताग्रस्त होकर बार बार फोन पर बातचीत करने लगे| संजय से कहा बकवास बंद करो ! सुनो, मैं अशक्त हो गया हूँ| ज़िन्दगी का कोई ठिकाना नहीं, कब क्या हो ? धनंजय(राजू) बानारस आये तो भी अपने पास नहीं आये | वे कहते है "मौक़ा नहीं मिला तो नहीं मिला जाने दो| ऐसा है बेटा कि मैं अब किसी लायक नहीं रहा | काम धाम होता नहीं| समस्या है खेतों की ! उनका क्या करूं?"[6] दोनों बेटे ज़मीन बेच देने का सलाह देते है| पिता के प्रयत्न का कमाव बेटे केलिए बेकार चीज़ बन जाता है|

सबकुछ बेच देने के बाद पैसे दोनों भाईयों को बाँट दें तो वे अपनी पत्नी के साथ क्या करेंगे – एक रिटायर्ड, ज़मींदार व्यक्ति अपने जीवन बिताने का कठिन परिश्रम कर रहे है | पुराने मित्र जीवनाथ वर्मा के शब्दों में कहे तो गाल धँस गए, दांत झड़ गए, आंखें अंदर चली गई, न पहचान पाए एक आकार बन गए है रघुनाथ|[7] कुछ लोगों ने पूछा कि रघुनाथ क्या ज़िंदा है? क्योंकि पेंशन ऑफिस में फ़ाइल बंद पडी है| लाइफ सर्टिफिकेट नहीं दिया है| सिर्फ दस रुपये की बात| रघुनाथ कहते है – "मुझे दस रूपए के जीवन में कोइ रूचि नहीं है|"[8]

वर्मा ने उन्हें ये कहकर सताया है कि "अपने लिए बहुत जी चुके रग्घू, अब अपने ले जियो !"[9] वर्षो पहले रघुनाथ और लोरा के साथ हुई प्रेम क्रीडाएँ, उनके जीवन में हुई एक चोरी की कहानी जो किसी को भी न पता है – ये सब उनके मन में उमड़ते रहे| रघुनाथ स्वयं कृतज्ञ भाव से शीला को दुसरे के घर से लाये | वास्तव में कई वर्षो पहले उन्हें न जानते पहचानते हुए वे उनके साथ आई है और उनके साथ एक नई दुनिया रचा ली है|

वे बहुत बहुत ही संघर्षरत होकर कर्तव्य केलिए एक परिभाषा देते है कि – कर्तव्य माने क्या है? विवशता – मरने के बाद सड़ जाएंगे, गलेंगे कौवे या कुत्ते – क्या फर्क पड़ता है| मरने के दिन बाप ने तो सबकुछ संभालने का दायित्व उनपर रखे और चले गए| उस ज़मीन को उनके बेटे अनमोल समझते है | बेटे उसे 'कैश' में भुना कर देखते है और कहते है इससे ज़्यादा उनकी एक महीने की इनकम है |

पहला बेटा संजय किसी उद्योगपति की बेटी से दूसरी शादी कर ली है, पहली पत्नी को बिना तलाक दिए। सोनल तो अपनी दुर्दशा पर बहुत रोती रहती है, रघुनाथ भी परेशान होते हैं, पर सोनल उनको विश्वास दिलाती है कि वो चाहे जो भी हो आत्महत्या नहीं करेगी। रघुनाथ को लगता है अब वो कहाँ जाए। पहले तो सोनल उनकी बहू थी। अब बेटा ही दूसरी शादी कर लिया है तो उनका क्या?अब तो सब सोनल की मर्जी पर है। अभी तक रघुनाथ अपनी बहू केलिए कुछ थे, आगे वह भी नहीं, बेटा पति ही न रहा तो ससुर किस बात के?

एक दिन सोनल के साथ उसका पहला ब्योफ्रेंड समीर ('भारत' का उपसंपादक) घर पर आता है तलाक कर बाद जिसे उसने अपने ससुर से कज़न कहके मिलवाया था| सनल ने कहा " पापा, समीर से कह रही हूँ कि इसी नगर में जब अपना घर है तो वहाँ क्यों है? ऊपर तो एक कमरा खाली हो पडा है"[10]

रघुनाथ को पता चलता है कि अपने दोस्त बावट का मर्डर उसी के बेटे से ही हो गया है| और उनका मित्र ज्ञानदत्त चौबे जो दो बार आत्महत्या करने की कोशिश की थी अब चौराहे पर भीख मांगता रहता है| "उन्होंने नतीजा निकला कि जीवन के अनुभव से जीवन बडा है| जब जीवन ही नहीं, तो अनुभव किसके लिए|"[11]

एकदिन जब वो अचानक घर मे अकेले होते हैं तो दो गुंडे उनको मारने आते हैं वो कहते हैं मैं तुमको इससे ज्यादा पैसे दिलवा दूंगा जितना मुझको मारने से मिलेंगे। तब गुंडे पूछते हैं कोई छुड़ाने नहीं आया तो। रघुनाथ कहते हैं वही तो देखना है ,कोई छुड़ाने आएगा.....? कहानी खत्म होती है और छोड़ जाती है अपने पीछे बहुत से प्रश्न।

काशीनाथ सिंह ने इस उपन्यास में किसानों एवं ग्रामीणों की समस्याओं एवं बदलते जीवन मूल्यों को यथार्थवादी ढंग से प्रस्तुत किया है| मेहनत और धैर्य से जीवन बिताने का परिश्रम रघुनाथ में है | वे विश्वास करते हैं कि इस दुनिया की कोई भी ताकत तथा कोई भी अड़चन उन्हें सफ़ल होने से नहीं रोकती। अपने मंज़िल की तरफ़ वे कदम बढ़ाते है | पर वही धैर्य खो जाने से सब कुछ बदलता है, हर वक्त संघर्षमय हो जाता है और जीवन के सपनाओं का पहाड़ गिर जाता है |

संदर्भ :

1. काशीनाथ सिंह : रहन पर रग्घू, राजकमल प्रकाशन, 2014, दरियागंज, नई दिल्ली, पृष्ठ 42.
2. वही, पृष्ठ 45
3. वही, पृष्ठ 89
4. वही, पृष्ठ 93
5. वही, पृष्ठ 92
6. वही, पृष्ठ 143
7. वही, पृष्ठ 146
8. वही, पृष्ठ 146
9. वही, पृष्ठ 148
10. वही, पृष्ठ 153
11. वही, पृष्ठ 158